Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

अजमेर-मेरवाड़ा में क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ

Reeta Rani*

Research Scholar, Department of History, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Vidyanagari, Churela, Jhunjhunu, Rajasthan

सार – *अजमेर के अन्दर 19वीं सदी के आखिरी समय में पढ़े-लिखे मध्यम वर्ग में राजनैतिक जागृति पैदा होने लगी थी। इस वक्त आर्य समाज ही एक इस तरह का आम संगठन था, जिसकी साप्ताहिक बैठकों में पढ़े-लिखे नवयुवक शामिल होकर सामाजिक विषयों से संबंधित विचार विमर्श करते थे। यह राजनैतिक जागृति एक छोटे समुदाय तक ही सीमित रह गई थी, जो इस वक्त जन संग्राम का बड़ा रूप नहीं ले पाई थी। अजमेर को एक केन्द्र बिन्दु बनाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने उच्च वर्ग में क्षेत्रीय प्रवृत्ति को पैदा करने के लिए अपनी प्रचार शैली को कठोर बनाया। यहाँ की भौगोलिक तथा प्राकृतिक विशषेताओं, बड़े निर्जन मरूस्थलीय, रेत के बड़े-बड़े टीले, अरावली पर्वत की श्रेणियाँ व घने जंगलों तथा क्रांतिकारियों की गतिविधियों को बढ़ाने में मददगार रहे। 20वीं सदी के अंदर आन्तेड़ की पहाड़ियों के तल में वहाँ के नवयुवकों द्वारा अंग्रेजी विरोधी गतिविधियों के संचालन के लिए संगठन बनाए गए। देशी रियासतों में अंग्रेज अधिकारियों के द्वारा राजशाही के विरोध में अजमेर के अंदर आंदोलन किया गया। राष्ट्र में सांम्प्रदायिक दंगों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हिन्दुओं के पुनरूत्थान के लिए शुद्धि संगठन जैसे क्रांतिकारी प्रयासों की कोशिश की गई।*

मुख्य शब्द:- *अजमेर, मेरवाड़ा, देशी रियासतें, क्रांतिकारी संगठन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजनैतिक जागृति*

----------X----------

परिचय:

राजस्थान में दयानन्द सरस्वती जी राजपूत राजाओं में राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक चेतना पैदा करने के उद्देश्य से आए थे तथा इस क्षेत्र को अपना विशेष काम का भाग बनाया और एक नई प्रचार शैली को अवलम्बित किया। उनके द्वारा यह भी महसूस किया कि यहाँ की जनता शासकों की अंधाधुंध भक्त है तथा राजाओं को बिना प्रभावित किए वैदिक धर्म का प्रचार करना मुश्किल है। वेदों की "यथा राजा तथा प्रजा" की युक्तियों के अनुसार जोधपुर, मसूदा, उदयपुर और शाहपुरा आदि देशी रियासतों व ठिकानों को शास्त्रों का अध्ययन कराने हेतु सरस्वती जी अध्यापक बने तथा जयपुर, भरतपुर, किशनगढ़ व करौली आदि राज्यों के राजपूत परिवारों व उच्च वर्गों में उत्तरदायित्व की भावना को पैदा करने के लिए राजा व शासित वर्ग के अदर जल्दी ही सहयोग स्थापित करने की जरूरत पर जोर दिया गया। उनके द्वारा राजा व महाराजाओं का ध्यान क्षत्रिय कत्तव्य की तरफ आकर्षित किया और उन्हें जनता के हितों की तरफ सचेत रहने को कहा। इनके मुताबिक राज्य तब तक स्मृद्ध नहीं रह सकते जब तक कि शासक तथा शासित वर्गों के हित एक जैसे ना हो। वे एक तंत्र शासन प्रणाली, एक आदमी के कट्टर विरोध में थे। उनके द्वारा शासकों के प्रशासन से संबंधित नियमों को कठोरता के साथ मानने के लिए प्रेरित किया गया।

उनके द्वारा "वेदों की ओर लोटो" जैसे धार्मिक नारे की राजीतिक निष्पत्ति "आर्यावर्त आर्यो के लिए है" इसका अभिप्राय "भारत भारतीयों के लिए है" के रूप में हुई। इन्होंने हिन्दू शब्द को फारसी बताया इसके लिए उन्होंने हिन्दू शब्द की जगह पर "आर्य, तथा हिन्दुस्तान की जगह पर "आर्यावर्त" शब्द को प्रयोग में लिया। उनके द्वारा अपने राजनैतिक संदेश के अंदर स्वराज, स्वभाषा, स्वधर्म तथा स्वदेशी चार तत्वों को प्रधानता दी। इनका मानना था कि इन तत्वों के द्वारा ही शासन करने वाला वर्ग आत्मसम्मान तथा आत्मविश्वास की भावना के विकास को नेतृत्व दे सकेंगे।

इनके व्यक्तित्व का प्रभाव कुछ राजाओं पर जरूर पड़ा लेकिन नरेशों व सामांत वर्ग के द्वारा किसी भंी बड़े सुधार की अपेक्षा करना आधार रहित सम्बल की तरह सिद्ध हुआ। अंग्रेजी सर्वोच्चता के अन्तर्गत देशी रियासती शासन स्वामी जी के आदर्शो की तरह कैसे सुधर सकता है। इन रजवाड़ों में शासकों की स्वतंत्र तथा प्रभुसत्ता शासन करने का निर्णय

www.ignited.in

करने की क्षमता के बारे में सोचना मात्र था। किन्तु फिर भी सरस्वती जी का राजस्थान की यात्रा का दौरा कुछ सामान्तीय घरानों तथा राज्यों में आर्यसमाज को फलित करने में बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण साबित हुआ।

उदयपुर:

दयानन्द जी 11 अगस्त, 1882 ई. को उदयपुर पहुँचे। वहाँ वे छः महीने तक रहे तथा हर रोज महाराजा सज्जन सिंह को मनुस्मृति का, वैदिक दर्शन, राजप्रकरणा न्याय, योगदर्शन से जुड़े हुए ग्रंथों का पाठन करवाया तथा इनकी जीवन की चर्चा को सुधारने और जनता व राष्ट्रहित की तरफ अग्रेषित होने की शिक्षा दी। उनके द्वारा महाराणा सज्जन सिंह को राज्य के प्रशासनिक कार्यो, न्यायालयों में हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि को अपनाने की तरफ प्रेरणा दी। परिणामस्वरूप महाराणा द्वारा राजकीय विभाग के अंदर फारसी-अरबी के शब्दों की जगह पर संस्कृत शैली के विभागों के नाम जैसे निज सैन्य सभा, महद्राज सभा, शिल्प सभा, शैलकान्तार संबंधिनी सभा, सैनिक विभाग, लेखा परीक्षक विभाग आदि।

शाहपुरा:

शाहपुरा जो कि उदयपुर के ठिकाना था वहाँ पर दयानन्द जी 8 मार्च, 1983 को पहुँचे। स्वामी जी से प्रभावित होकर शाहपुराधीश नाहरसिंह वर्मा द्वारा अपने निजी दुर्ग में एक यज्ञशाला बनाई तथा हर रोज हवन,यज्ञ करवाने का वायदा किया। वैदिक धर्म को राज्य का राजधर्म घोषित किया गया, राज्य से संबंधित राज्य कार्यो को वेदों के राजप्रकरण के आधार पर अवस्थित किया गया और उर्दू की जगह हिन्दी भाषा को राज्य की भाषा घोषित करने वाला राजपूताना का प्रथम ठिकाना था। राजकीय झण्ड़े के नीचे दस्तावेजों, किले के प्रमख दस्तावेजों पर, स्टाम्प पेपर्स पर मनुस्मृति का श्लोक लिखवाया गया- "क्षत्रियस्य परमो धर्मः प्रज्ञामेवपालम्।"

जोधपुर:

दयानन्द सरस्वती जी 31 मई,1983 ई. को जोधपुर पहुँचे। वहाँ के राजा जसवंत सिंह को राज्य कार्यो की तरफ पूर्ण रूप से उदासीन होते देखते ही मनुस्मृति में लिखे उपदेश की तरह ही उन्हें राज्यधर्म का उपदेश दिया और वक्त पर देश के कल्याण के लिए स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग, गौ रक्षा, हिन्दी भाषा के प्रचार जैसे रचनात्मक कार्यो को भी अपनाने की तरफ प्रेरित किया। शासक जसवंत सिंह खुद तो स्वयं की उदासीनता को छोड़ नहीं सके, लेकिन उनके छोटे अनुज कर्नल प्रताप सिंह दयानन्द के तर्कमूलक उपदेशों से प्रभावित हुए तथा अगस्त 1883 ई. में जोधपुर राज्य के प्रधानमंत्री बनने पर राज्य के अंदर हिन्दी भाषा को राजकीय भाषा के रूप में स्थापित किया गया। इसके पश्चात् दूसरे भी कई प्रशासनिक सुधार किए गए।

मसूदा:

दयानन्द सरस्वती जी दिसम्बर 1878 से लेकर जून 1881 ई. के बीच अनेक बार इस्तमरारदार मसूदा और अजमेर के ठिकाने में गए थे। वहाँ के इस्तमरारदार राय बहादुरमल द्वारा वैदिक धर्म से आकर्षित होकर रोज के कामों में परिवर्तन किए गए तथा सोनगरी की पहाड़ियों पर यज्ञशाला को बनाकर यज्ञोपीत संस्कार शुरू किए गए और बेटों की विद्या के लिए वेदों का ज्ञान रखने वाले अध्यापक नियुक्त किए गए। उनका राजस्थान में आने का उद्देश्य क्षत्रिय, सामान्त वर्ग में राजनैतिक चेतना व उनमें कत्र्तव्य बोध को जगाना था।

मारवाड़ के गाँवों के जागीरी भागों के अन्दर सन् 1907 ई. में राजपूतों के स्वाभिमान की प्रवृत्ति को जगाने के लिए तथा चरित्र के निर्माण के लिए खरवा के राव गोपाल सिंह द्वारा 1908-09 ई. में जोधपुर व अजमेर के अंदर वैध व पण्डित विष्णुदत्त, उत्तमनाथ, साधु बिरंदीचन्द आदि को आर्य समाज के उपदेशकों की तरह ही बराबर शिक्षित कर अपने स्वयं के खर्चे पर भेजा गया। इनको गोपाल सिंह के द्वारा गाँवों में ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ जनजागृति पैदा करने के लिए नियुक्त किया गया। 2-3 सितम्बर, 1923 ई. को अजमेर की राजस्थान क्षेत्रीय सभा की अजमेर में हुई बैठकों के अंदर गोपाल सिंह द्वारा हर क्षत्रिय को वर्ण प्रतीक के रूप में अपने साथ एक तलवार रखने के लिए कहा गया। उनके मुताबिक अंग्रेजी शासन के कारण क्षत्रियों में वीरता व पुरूषार्थ में कमी होती जा रही थी। बैठकों में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य किए जाने, बैठक में स्वदेशी कपड़ों के प्रयोग, क्षत्रिय बच्चों के लिए सैन्य शिक्षा दिए जाने का फैसला लिया गया। इस सभा का प्रमुख कार्यालय राजपूत बोर्डिंग हाउस, अजमेर के अंदर रखा गया। क्षत्रियवादी प्रवृत्ति को पैदा करने के लिए "राजस्थान सामचार" मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया।

बंगाल विभाजन का प्रभाव:

वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा 16 अक्टूबर, 1905 ई. को किए गए बंगाल विभाजन को पूरे राष्ट्र में तेज प्रतिक्रिया हुई। इसके कारण देश में क्रांतिकारी गतिविधियों को आश्रय मिला। इस विभाजन का असर अजमेर क नवयुवकों पर

www.ignited.in

पड़ा। राजपूताना की सांस्कृतिक विरासत की तरफ श्रद्धा होने की वजह से बंगाल के क्रांतिकारी अजमेर की तरफ आकर्षित होने लगे थे। मारवाड़ के वीर दुर्गादास राठौड़ तथा महाराणा प्रताप के शौर्य और देश के प्रति स्वाभिमान की कथाओं से बंगाल के नागरिक काफी प्रभावित हुए। राजस्थान के शौर्य से युक्त इतिहास द्वारा बंगला साहित्य को एक नई दिशा दी गई थी। राजस्थान में उस समय शस्त्र से संबंधित कानून लागू नहीं किया गया था। अजमेर में उस वक्त आसानी से कम मूल्यों पर हथियार प्राप्त हो जाते थे। सामन्तों और जागीरदारों के अंदर ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों के बुरे व्यवहार के कारण द्वेष मौजूद था। उनके द्वारा भी क्रांतिकारियों को गुपचुप तरीकों से प्रोत्साहन दिया गया। बंगाल विभाजन के पश्चात् ही अजमेर में क्रांतिकारी गतिविधियाँ आरंभ हो गई थी। क्रांतिकारी स्वराज्य लेना चाहते थे। अंग्रेजी शासन को जड़ से समाप्त करना चाहते थे। इसकी उनमें तेज भावनाएँ थी।

स्वदेशी प्रचार:

देश के अंदर बंगाल विभाजन, बहिष्कार, स्वदेशी ब्रिटिश सरकार की तरफ सक्रिय विरोध की एक नई भावना का प्रतीक था। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी और विपिनचन्द्र पाल द्वारा आम सभाओं में अपने भाषणों को माध्यम से राजनैतिक चेतना जगाई तथा स्वदेशी के उपयोग की प्रतिज्ञा करवाई- "सर्वशक्तिशाली ईश्वर को अपना साक्षी मानकर तथा आगामी पीढ़ियों की उपस्थिति में खड़े होकर हमारे सबके द्वारा यह गंभीर प्रतिज्ञा की जाती है कि जहाँ तक व्यवहारिक होगा हमारे द्वारा घर की बनी हुई वस्तुओं का ही प्रयोग किया जाएगा।" इन सब प्रतिज्ञाओं को अजमेर के पढ़े-लिखे वर्ग पर भी प्रभाव पड़ा। अजमेर के ठिकाने खरवा के इस्तमरारदार राव गोपाल सिंह द्वारा स्वदेशी के प्रचार के लिए नवयुवकों को अपने खर्चे से गाँवों में भेजा। खरवा शासक द्वारा स्वयं खादी से बने वस्त्रों का उपयोग करना आरंभ कर दिया गया। ग्यारसीलाल जो कि अजमेर के अन्दर आर्य समाज के मंत्री थे उनके द्वारा समसामयिक विषयों के ऊपर वाद-विवाद की प्रवृत्ति को पैदा करनने के लिए डी.ए.वी. स्कूल अजमेर में एक "डिबेटिंग क्लब" 1903 ई. में स्थापित किया गया। 1904 ई. के अन्दर ग्यारसीलाल और रामबिलास शारदा द्वारा 1905 ई. में बनारस कांग्रेस अधिवेशन से लौटकर खादी व स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय क्रांतिकारियों का प्रभाव:

19वीं सदी में किए गए धर्म-सुधार आंदोलन द्वारा जन चेतना की आधारशिला तैयार कर दी गई, जिसके माध्यम से एक ऐसा पढ़ा-लिखा वर्ग तैयार कर दिया गया जो कि सामाजिक बुराईयों की तरफ असंतुष्ट था। विवेकानन्द तथा स्वामी दयानन्द जी ने अपने उपदेशों व प्रचार कार्यो के द्वारा देशी शासकों का अपनी धरती माँ के प्रति रक्षा के लिए पुकारा। इन्होंने देश की संस्कृति की पुरानी परम्पराओं व मूल्यों की तरफ नवयुवकों के अंदर आस्था पैदा की तथा देश के गौरवशाली इतिहास की तरफ सोच विचार करने के लिए विवश कर दिया। उनके द्वारा वैदिक स्वराज्य की अवधारणा को पुनः जीवित कर राजनैतिक अधिकारों की तरफ नागरिकों को सजग किया। उनके द्वारा पहले "आध्यात्मवाद" तथा फिर "राष्ट्रवाद" का नारा दिया गया।

महाराष्ट्र के कृष्ण वर्मा जी द्वारा 1888-89 ई. से ही अपनी वकालत आरम्भ कर दी थी। स्वदेशी के प्रचार को वे जनचेतना का आधार मानते थे। नसीराबाद, केकड़ी व ब्यावर में इन्होंने तीन कॉटन वीविंग फैक्ट्रियां स्थापित की। दयानन्द जी के द्वारा उन्हें परोपकारी सभा का मैम्बर बनाया गया। वैदिक धर्म के प्रचार व उच्च शिक्षा के लिए इन्हें इंग्लैण्ड जाने के लिये प्रेरित किया।

श्याम कृष्ण वर्मा जी 1885 ई. में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर अजमेर आ गए तथा 1889 ई. में अजमेर में म्यूनिसिपल कमेटी के उपाध्यक्ष चुने गए। वे निष्क्रिय प्रतिरोध को अंग्रेजों को देश से बाहर निकाले जाने का एक साधन मानते थे। अजमेर में हुए जन आंदोलनों में उनके द्वारा सीधे हिस्सा नहीं लिया गया, लेकिन वे प्रेरक जरूर रहे। देश के दूसरे भागों के घटनाक्रम ने भी राजपूताना के अन्तर्गत स्वतंत्र संघर्ष को प्रभावित किया। 20वीं सदी में बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में पढ़े-लिखे नवयुवकों का चिन्तन आक्रामककारी हो गया था। महाराष्ट्र में शिवाजी तथा गणपति उत्सव आयोजित किए जाने लग गए थे जिनमें शिवाजी व गणपति संबंधित उत्सव मनाये जाने लग गए थे, जिनका भाव राष्ट्र को आजाद करवाने के लिए बलिदान की भावना पैदा करना था।

1905 ई. के पश्चात् पूरे देश में जन आंदोलन क्रांतिकारी स्वरूप धारण करने लग गया था। महाराष्ट्र में अभिनव भारत समिति, लंदन में इण्डियन हाउस, बंगाल में अनुशीलन समिति, अमेरिका में गदर पार्टी आदि क्रांतिकारी संगठनों द्वारा देश में व बाहर हिंसात्मक तरीको के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता खत्म करने की कोशिश की गई। इन सबसे प्रेरित होकर अजमेर में दामोदर दास राठी, अर्जुनलाल सेठी व केसरी सिंह बराहठ आदि के द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियों को संचालित किया गया। इन सब ने गुप्त रूप

www.ignited.in

से "वीर भारत सभा" को स्थापित किया। जिसका देश के क्रांतिकारी संगठनों से संबंध था।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ:

समूचे देश के अंदर क्रांतिकारियों से प्रभावित होकर अजमेर के नवयुवकों के द्वारा आनासागर के किनारे में आंतेड़ की पहाड़ियों के नीचे अपना गुप्त ठिकाना बनाया जिससे कि कम शोर होने पर भी क्रांतिकारी समीप की पहाड़ियों में बिखर कर जयपुर व किशनगढ़ की रियासतों में चले जाते थे। प्रकाशदत्त भार्गव, रामचन्द्र बापट, मदनगोपाल यादव, जगदीशदत्त शर्मा, रूद्रदत्त मिश्र आदि ऐसे नवयुवक थे जिन्होंने इन गतिविधियों का संचालन किया। इनका यह केन्द्र दूध डेयरी के रूप में कार्य करता था जहाँ पर छिपकर अस्त्र-शस्त्र चलाने की ट्रेनिंग दी जाती थी। अजमेर के अंदर बढ़ रही क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने के लिए देश की सरकार द्वारा खुफियाँ पुलिस के उपाध्यक्ष प्राणनाथ डोगरा को अजमेर भेजा गया। दूसरे विश्वयुद्ध छिड़ने तथा भारत छोड़ों आंदोलन के शुरू हो जाने के कारण अजमेर में क्रांतिकारी क्रियाकलाप कमजोर पड़ गए।

जागीरदारी शोषण के खिलाफ आंदोलन:

1918 से 1936 ई. के बीच में ब्रिटिश प्रान्तों में कांग्रेस के स्वराज आंदोलनों के समान देशी रजवाड़ों के शासन के अंदर जनता की भागीदारी के लिए अजमेर के नवयुवकों ने कई संगठन बनाए। जहाँ बाहर किए नेताओं को आश्रय दिया जाता है। इन संगठनों द्वारा समाचार-पत्रों तथा प्रार्थना-पत्रों के माध्यम से जागीरदारी शोषण की उत्पीड़ना के खिलाफ आंदोलन किए गए। अजमेर की जनता द्वारा रियासती आंदोलन का नेतृत्व कर 21 रियासतों से मिले इस क्षेत्र को एक प्रांतीय इकाई के रूप में गठित किया गया।

पहले विश्वयुद्ध के पश्चात् गाँधी जी के नेतृत्व के अन्तर्गत कांग्रेस के आंदोलनों को जनता का आधार प्राप्त होने लग गया था। इस वक्त मध्य-भारत और राजस्थान की देशी रियासतों के पढ़े-लिखे नवयुवकों ने जागीरदारों के उत्पीड़न के खिलाफ क्रांतिकारी आंदोलन आरंभ किए। वे जागीरदारों में प्रचलित बेगार प्रथा व अनुचित करों के खिलाफ कांग्रेस के मंच के द्वारा अपने आंदोलनों का संचालन करना चाहते थे। रियासतों के अंदर ब्रिटिश नौकरशाही के बढ़ रहे दबाव के कारण शासक प्रशासनिक कामों की तरफ से उदासीन होते जा रहे थे। देशी रियासतों के पढ़े-लिखे लोग जागीरदारी शोषण के खिलाफ शुरू किए गए आंदोलनों को देश के राष्ट्रीय आंदोलन का एक खास हिस्सा बनाना चाहते थे, लेकिन कांग्रेस द्वारा रजवाड़ों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने से मना कर दिया जिसके पश्चात् अजमेर को इस आंदोलन का केन्द्र बनाया गया।

राजपूताना मध्य-भारत सभा:

20वीं सदी के द्वितीय दशक के अन्तर्गत अजमेर के अंदर आर्य समाज द्वारा धार्मिक, सामाजिक पुनरूत्थान आंदोलन के माध्यम से कांग्रेस के जन आंदोलन के लिए एक पृष्ठभूमि को तैयार कर दिया गया। सन् 1955 ई. में कांग्रेस कमेटी, 1917 में होमरूल लीग की स्थापना कर अजमेर के पढ़े-लिखे वर्ग द्वारा राजनैतिक अधकारों की माँग करना आरम्भ कर दिया गया। यहाँ की आस-पास की रियासतों में प्रेस, संस्थाओं के गठन, लेखन, सभाओं के गठन पर रोक थी। निष्कासन, जेल, सम्पत्ति जब्त, पिटाई आदि के माध्यम से अंग्रेजी नौकरशाही ने डर का माहौल बना रखा था। देशी रियासतों के नवयुवकों द्वारा अजमेर में समाचार-पत्रों, संगठनों को स्थापित कर जागीरदारों के शोषणों के विरूद्ध मिलकर आंदोलन शुरू किए। वे कांग्रेस की तरह ही रियासतों के अन्तर्गत उत्तरदायी शासन का आंदोलन जारी रखना चाहते थे। कांग्रेस के नेतृत्व के अन्तर्गत वे रियासतों के अंदर अनुचित करों को समाप्त करना चाहते थे और शासकों में अपनी प्रजा की तरफ कत्तव्य पालन की भावना को पैदा करना चाहते थे।

मध्य भारत व राजस्थान की रियासती जनता की राजनैतिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रथम बार अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दिल्ली अधिवेश जो कि 1918 ई. में हुआ था, के वक्त रियासतों के आंदोलन के नेताओं द्वारा "राजपूताना मध्य भारत सभा" को स्थापित किया गया।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि जब भी राष्ट्र में उदार-सुधारवादी आंदोलन का ब्रिटिश नौकरशाही द्वारा नृशंसता व निमर्मता से दमन किया गया तो यहाँ के नवयुवकों द्वारा अपनी जान की परवाह किए बिना अंग्रेजी ताज के निरंकुश प्रतिनिधियों की मौत के लिए बमों का उपयोग किया गया। हालांकि ये गिने-चुने क्रांतिकारी प्रयत्न अंग्रेजों की कठोर दमनात्मक नीतियों के सामने थोड़े से थे, लेकिन इनके साम्राज्य को झकझोर अवश्य देते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा 1864-83 ई. के बीच रियासतों में घूमकर शासकों के भीतर छिपी हुई क्षत्रिय

www.ignited.in

प्रवृत्ति को चुनौती दी। उनका यह मानना था कि वेदों की ओर लौटने पर ही स्वराज्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस तरह अंग्रेज सरकार की दमनात्मक नीतियों का प्रतिवाद करने और धरती माता की तरफ आस्था पैदा करने के लिए जिले के अंदर क्रांतिकारी आंदोलन शुरू किया गया जो अंत में राष्ट्रीय आंकाक्षाओं की तरह ही ब्रिटिश विरोधी जनता के आंदोलन में समा गया। रियासतों व ब्रिटिश नौकरशाही में अंग्रेजों द्वारा प्रेषित राजशाही के खिलाफ दोहरा संघर्ष कर जिले के नवयुवकों ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के साथ राजस्थान के एकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देश हितैषी, अगस्त (1883), पृ. 6
2. आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन (1910-11 ई.), वैदिक यन्त्रालय, अजमेर (1919), पृ. 4-5
3. तरूण राजस्थान (मासिक), (21 जुलाई, 1924), पृ. 5-6
4. नवज्योति, सम्पादक चैधरी, रामनारायण (1 जुलाई, 1938)
5. मेहता पृथ्वी सिंह, हमारा राजस्थान, इलाहाबाद (1950), पृ. 284
6. सेन्सस् ऑफ़ इण्डिया (1951), वॉल्यूम X-, पार्ट-I -, जोधपुर, पृ. 58
7. अजमेर विधानसभा वाद-विवाद (26 मई, 1952), आर.एस.ए.बी के पुस्तकालय में उपलब्ध, पृ. 22
8. जैन, एम.एस. आधुनिक राजस्थान का इतिहास, जयपुर (1955), पृ. 55-57
9. रिपोर्ट ऑफ़ द स्टेट्स रिऑर्गनाइजेशन कमीशन 1955, पब्लिकेशन ब्रांच, गवर्नमेन्ट ऑफ़ इण्डिया, दिल्ली (1956)
10. ढौढियाल, बी.एन., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, अजमेर, अलवर (1966) पृ. 404
11. जोशी सुमनेश, स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, जयपुर (1972), पृ. 59
12. कछवाहा, ओ.पी., फेमिन्स इन राजस्थान (1900-1947 ई.) हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर (1985), पृ. 39

Corresponding Author

Reeta Rani*

Research Scholar, Department of History, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Vidyanagari, Churela, Jhunjhunu, Rajasthan

www.ignited.in